15

समझदारी से रहना

(7:1–29)

यीशु के पहाड़ी उपदेश के अन्तिम भाग में उसने कपट, प्रार्थना, धर्मी जीवन के धर्ममय नियम, सच्चाई के सच्चे मन से आज्ञापालन के विषयों पर बात की। उसने दूसरों का न्याय करते हुए कपटी होने के बारे में चेतावनी दी (7:1–6)। यीशु ने अपने सुनने वालों को परमेश्वर की ओर से दिए गए अच्छे दानों की तलाश करते हुए प्रार्थना में बने रहने की शिक्षा दी (7:7–11)। उसने पारस्परिक व्यवहार का सिद्धांत दिया, जिसे सुनहरी नियम के रूप में जाना जाता है (7:12)। उपदेश के अन्तिम ज़ोर के रूप में उसने अन्तरों की एक शृंखला दी जिसमें उसके सुनने वालों को पसन्द चुनने की चुनौती दी गई (7:13–27)। उसकी शिक्षा के खत्म होने के बाद भीड़ चकित रह गई (7:28, 29)।

धर्म से न्याय (7:1-6)

[1]"दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। [2]क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा। [3]"तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्‌ठा तुझे नहीं सूझता? [4]जब तेरी ही आंख में लट्‌ठा है, तो तू अपने भाई से कह सकता है, ला मैं तेरी आंख से तिनका निकाल दूं। [5]हे कपटी! पहले अपनी आंख में से लट्‌ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली–भांति देखकर निकाल सकेगा।

[6]"पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पांवों तले रौंदे और पलटकर तुम को फाड़ डालें।"

अध्याय 6 के चिन्ता के विषय से अपने चेलों को दूसरों का जल्दबाजी में नकारात्मक निर्णय न करने का निर्देश देते हुए यीशु अध्याय 7 के विषय में आ गया। यीशु ने अपने चेलों को हर निर्णय पीछे छोड़ देने के लिए अगुआई नहीं की, क्योंकि परमेश्वर के राज्य के नागरिक के रूप में रहने के लिए आम तौर पर सच्चाई से परख करनी आवश्यक होती है।

आयत 1. यीशु ने आज्ञा दी, "**दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।**" यीशु की मनाही की यूनानी संरचना–अवश्य माननीय वर्तमान क्रिया के साथ (*mē*)–चल रही कार्यवाही को रोकने की मांग करती है। NLT में "दूसरों का न्याय करना बन्द करो" है। क्या यीशु ज़ोर देकर किसी भी प्रकार का न्याय करने की भर्त्सना कर रहा है? अन्य वचनों से हमें पता चलता है कि ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए इस उपदेश में आगे उसने कहा, "झूठे

भविष्यवक्ताओं से सावधान रहो ... उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे'' (7:15, 16)। वह यह कह रहा था कि यह तय करने के लिए कि सिखाने वाले सच्चे हैं या झूठे और यह निर्णय लेने के लिए कि उनके ''फल'' अच्छे हैं या बुरे, उन्हें उनकी शिक्षा और जीवन शैली को देखना होगा। यूहन्ना रचित सुसमाचार में, यीशु ने यह भी कहा, ''मुंह देखकर न्याय न चुकाओ, परन्तु ठीक-ठीक न्याय चुकाओ'' (यूहन्ना 7:24)। उसकी ताड़ना केवल व्यक्ति के अपने मानदण्ड पर आधारित व्यक्तिगत न्याय की मनाही करती है, पर यह न्याय के लिए परमेश्वर के धार्मिक मानदण्ड का इस्तेमाल करने का आग्रह करती है।

हमारे प्रभु की बात ''दोष मत लगाओ'' अच्छाई और बुराई के बीच परख करने को गलत नहीं ठहराती, क्योंकि पवित्र शास्त्र के अन्य वचनों में हमें यह निर्णय लेने की आज्ञा दी गई है (रोमियों 16:17, 18; 1 कुरिन्थियों 5:9-13; 2 कुरिन्थियों 6:14-18; गलातियों 1:9; तीतुस 1:9-14; 3:10, 11; 1 यूहन्ना 4:1-3; 2 यूहन्ना 9-11; यहूदा 3, 4)। यीशु के शब्दों को कलीसिया के अनुशासन को गलत ठहराने के लिए नहीं समझा जाना चाहिए। 18:15-18 में यीशु ने स्वयं इसकी आज्ञा दी, जैसे पौलुस ने (1 कुरिन्थियों 5:1-5; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6, 14, 15)। हमें परमेश्वर के सही मानदण्ड से न्याय किए बिना कैसे पता चल सकता है कि किसी भाई ने गलती की है (देखें गलातियों 6:1)?

इसलिए यीशु की आज्ञा को परमेश्वर की धार्मिकता से शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता को अलग करने के लिए पहाड़ी उपदेश के उद्देश्य के संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है (5:20)। ''दोष'' के लिए इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द (*krinō*) ''चुनने, छांटने या निर्णय तय करने का संकेत देता है। इस वचन में यह स्पष्ट है कि यीशु अपने आप में धर्मी होने और दोष लगाने वाले कठोर व्यवहार को जैसा कि शास्त्रियों और फरीसियों द्वारा दिखाया जाता था, गलत ठहरा रहा था। वह अपने अनुयायियों से ऐसी सोच रखने से बचने को कह रहा था। उसकी आज्ञा चेहरा देखकर न्याय करने या किसी दूसरे की मंशा या मन देखकर न्याय करने की मनाही करती है (देखें यूहन्ना 7:24; 1 कुरिन्थियों 2:11)। यह उस व्यक्ति के व्यवहार पर भी दोष लगाता है, जो किसी दूसरे के जीवन में दोष ढूंढ़ता रहता है पर अपने पाप को देखने से इनकार करता है (7:3, 4)। हम किसी दूसरे व्यक्ति पर अनन्त दोष नहीं लगा सकते, क्योंकि हम सब का न्याय धर्मी न्यायी यीशु मसीह के द्वारा होगा (यूहन्ना 5:22; रोमियों 2:1, 2; 14:4, 10-12; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 तीमुथियुस 4:8; प्रकाशितवाक्य 20:11-15)।

मैदानी उपदेश में, यीशु की बात दया के संदर्भ में रखी गई है: ''जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो। दोष मत लगाओ; तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा: दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी न ठहराए जाओगे: क्षमा करो, तो तुम्हें भी क्षमा किया जाएगा'' (लूका 6:36, 37)। एक टीकाकार ने कहा है, ''जैसे हम क्षमा करते हैं क्योंकि हमें क्षमा किया गया है, वैसे ही हम दूसरों के प्रति अपने न्याय में उदार होते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमारे साथ उदारता से व्यवहार किया है।''[1]

आयत 2. यीशु ने न्याय करने या दोष लगाने के विरुद्ध अपनी आज्ञा का आधार दिया: **''जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे भी नापा जाएगा।''** यह आयत कविता के

ढंग से "दोष" (*krimati krinete krithēsesthe*) और "नापते" (*metrōi metreite metrēthēsetai*) शब्दों के दोहराए जाने का इस्तेमाल करती है। इसका अक्षरश: अर्थ होगा "क्योंकि जिस नाप के साथ तुम न्याय करते हो, तुम्हारा न्याय भी उसी से होगा; और जिस नाप से तुम नापते हो, तुम्हारे लिए उसी से नापा जाएगा।"

इस आयत में समानार्थी समानांतर हैं जिसमें "दोष लगाना" और "नापना" एक-दूसरे के समान है। यीशु द्वारा इस्तेमाल की गई नापने की भाषा लोकोक्ति के रूप में लगती है (देखें मरकुस 4:24; लूका 6:38)। मिशनाह में कहा गया है, "जिस नाप से व्यक्ति नापता है, उसके लिए उसी से नापा जाएगा।"[2] यह रूपक बाज़ार से लिया गया है, जहां एक विक्रेता वस्तुओं की सही-सही मात्रा को नापता है, जिसे खरीदार खरीदना चाहता है। माइकल जे. विलकिन्स ने समझाया है, "यह 'नाप' भार या दूरी नापने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला तराजू, बर्तन या छड़ी हो सकता है, परन्तु इसका इस्तेमाल प्रतीकात्मक रूप में किया गया था जैसा यहां पर है (तुलना 23:32)।"[3]

यीशु द्वारा मना किए गए न्यायों को करने में चौकस होना आवश्यक है क्योंकि न्याय करने वाले का न्याय भी उसी मानक से होगा, जिसे वह दूसरों का न्याय करने के लिए इस्तेमाल करता है। यदि हम दूसरों का न्याय कठोरता से करते हैं, तो हमें भी सबसे बड़े न्यायी परमेश्वर की ओर से हमारा न्याय कठोरता से किए जाने की अपेक्षा करनी होगी। टालमुड में कहा गया है, "जो अपने पड़ोसी पर [ईश्वरीय] न्याय बुलाता है वह पहले स्वयं [अपने ही पापों के लिए] पर दण्ड लाता है।"[4] डेविड हिल ने व्याख्या की है, "रब्बियों के अनुसार, परमेश्वर संसार का न्याय दो 'नापों' अर्थात दया और न्याय के साथ करता है।"[5] व्यक्ति को दूसरों के प्रति दयालु होना चाहिए ताकि परमेश्वर उसके साथ दयालु हो सके (याकूब 2:13)।

आयतें 3, 4. यीशु ने अपनी बात को समझाने के लिए इससे दो उदाहरण दिए। पहले उदाहरण में दोष की समीक्षा की (**को देखता है**; 7:3), और दूसरे में इसका सुधार था (**निकाल दूं**; 7:4)। एक अर्थ में उसने पूछा, "तुम अपने भाई की छोटी सी गलती के लिए उसकी आलोचना कैसे कर सकते हो, जबकि तुम में बड़ी गलती है?" यूनानी शब्द (*karphos*) का अनुवाद **तिनका** पुआल या लकड़ी का कचरा है। NIV में "लकड़ी के बुरादे का तिनका" है जबकि NJB में "किरच" है। यीशु ने इस व्यक्ति के जीवन में जिस पर दोष लगाया जा रहा था पाप को सही नहीं ठहराया, पर उसने उसके छोटे पाप में उसके आलोचक के जीवन के बड़े पाप से अन्तर किया। अनुवादित शब्द **लट्ठा** (*dokos*) का अर्थ घर की छत को सहारा देने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले लकड़ी के लट्ठे सहित कुछ भी हो सकता है। यहां पर इस्तेमाल किया गया यीशु का रूपक हो सकता है कि उसके कई सालों का "बढ़ई" (*tektōn*) या "मकान बनाने वाले" (13:55; मरकुस 6:3) के रूप में काम करने से लिया गया है।

उपदेश के आरम्भिक भागों की तरह यीशु ने अपने विचार को स्पष्ट करने के लिए बीच में अतिश्योक्ति जोड़ी (देखें 5:23, 24, 29, 30, 34-36, 40)। परन्तु यहां इस्तेमाल की गई अतिश्योक्ति हंसाने वाली, यहां तक कि तर्क विरुद्ध है। शायद इसे यीशु के सुई के नाके में से ऊंट के निकलने (19:24) या किसी के ऊंट को निगलने के लिए मच्छर को छानना (23:24) के रूपक के यीशु के अलंकार से मिलाया जा सकता है। क्रेग एस. कीनर ने टिप्पणी की है, "जिस

प्रकार से कोई नहीं चाहेगा कि कोई अंधा किसी को गड्ढे में ले जाए (15:14; 23:16), वैसे ही कोई किसी अंधे डॉक्टर से नहीं चाहेगा कि वह उस की आंख का ऑपरेशन करे।"[6] किसी की आंख में "तिनका" या "लट्ठा" छोटे और बड़े पापों के लिए लोकोक्ति का ढंग रहा होगा।[7]

आयत 5. सुधार को शामिल करते हुए यीशु ने एक दूसरा उदाहरण इस्तेमाल किया। उसने बड़े पाप वाले व्यक्ति को *कपटी* कहा (6:2, 5 पर टिप्पणियां देखें)। उसने उसे अपने आपको धर्मी समझने वाले व्यक्ति के रूप में दिखाया, जिसे लगता है कि वह दूसरों से बेहतर है। अपने आप में धर्मी होने का स्वभाव अपने आपको सही ठहराने, और दूसरों को गलत ठहराने के लिए है (देखें 2 शमूएल 12:1–14)। इस तथ्य के प्रकाश में तालमुड में यह अच्छी सलाह दी गई है: "अपने पड़ोसी पर उस दोष के साथ ताना न मारो जो तुम में अपने आप में है।"[8]

यीशु ने यह नहीं कहा कि छोटे पाप वाले को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाए। इसके बजाय उसने कहा, "**पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा**।" विचार यह नहीं है कि आलोचक "लट्ठा" निकाले, ताकि वह अपने भाई का न्याय कर सके; बल्कि यह है कि वह इसलिए इसे निकाले ताकि अपने भाई को उसकी आंख से "तिनका" निकालने में सहायता के लिए वह और साफ़ देख पाए। ऐसा तिनका निकालने की सामर्थ किसी की अपनी धार्मिकता में नहीं, बल्कि उस प्रेम में है जो गलती करने वाले भाई के लिए है और उसकी सहायता करने की सच्चे मन से इच्छा है (लूका 17:3; रोमियों 15:1; गलातियों 6:1; 2 तीमुथियुस 4:2; तीतुस 1:13)।

आयत 6. गलत न्याय से दूर रहने की आज्ञा देने के बाद यीशु ने अपने चेलों को एक महत्वपूर्ण अन्तर करने के लिए कहा: "**पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पांवों तले रौंदे और पलटकर तुम को फाड़ डालें**।"

प्राचीन समयों में कुत्तों को घरों में बिल्कुल नहीं रखा जाता था। वे दलों में घूमते और क्रोध दिलाए जाने पर या बहुत भूखे होने पर लोगों पर हमला कर देते थे। जिस कारण यहूदियों के मन में उनके प्रति बहुत ही नकारात्मक विचार था (भजन संहिता 22:16; नीतिवचन 26:11; लूका 16:21; 2 पतरस 2:22; प्रकाशितवाक्य 22:15)। किसी को "कुत्ता" कहना उस पर लगाए जाने वाले आरोपों में सबसे बड़े अपमानों में से एक था (1 शमूएल 17:43; 2 शमूएल 16:9)। यहूदी लोग अन्यजातियों को "कुत्ते" कहते थे (15:26, 27) और पौलुस ने इस शब्द का इस्तेमाल झूठी शिक्षा देने वालों के लिए किया (फिलिप्पियों 3:2)।

"पवित्र वस्तु" (*to hagion*) वाक्यांश का इस्तेमाल सप्तति अनुवाद में बलिदान के मांस की बात करने के लिए छोटे-छोटे अन्तरों से किया जाता है (निर्गमन 29:33, 34; लैव्यव्यवस्था 2:3; 22:10–16; गिनती 18:8–19)। कोई खुद्दार यहूदी मांस का टुकड़ा जिसे परमेश्वर को बलिदान के रूप में चढ़ाया गया हो, कुत्ते को डालने की बात सोचता भी नहीं। यीशु यह घोषणा कर रहा था कि शुभसमाचार अर्थात सुसमाचार का बहुत आदर होना चाहिए और इसे किसी भी व्यक्ति पर जो इसे सुनने से इनकार करता है बर्बाद नहीं करना चाहिए।

पवित्र शास्त्र में और जगह पर कुत्तों के साथ-साथ सूअरों का भी उल्लेख है (2 पतरस 2:22)। वे अशुद्ध पशु थे (लैव्यव्यवस्था 11:7; व्यवस्थाविवरण 14:8) और इस कारण

मुख्यतया वे अन्यजातियों के क्षेत्रों में ही पाए जाते थे (8:30–32; लूका 15:15, 16)। एक सम्माननीय यहूदी उन्हें छूने की बात भी था नहीं करता। दोनों नियमों के अन्तराल के बीच, सिलियुसिड टायरेंट अंटियोकुस ने यहूदियों को सूअर बलिदान करने और सुअर का मांस खाने के लिए विवश करने की कोशिश की। परन्तु उसने पाया कि यहूदी लोग ऐसी घृणित चीज़ों को खाने के बजाय मरना पसन्द करते थे।[9] यहूदी लोग सूअर नहीं पालते थे, इस कारण यहूदी इलाकों में रहने वाले सूअर आवारा घूमते थे, सफ़ाई करने वालों के रूप में घूमते थे और कुछ भी खाते थे (भजन संहिता 80:13)।

सूअरों जैसे इतने निकम्मे जानवरों के सामने इतने महंगे मूल्य के मोती फैंकना कल्पना से बाहर की बात थी। पवित्र भोजन कुत्तों को डालने के पिछले रूपकों की तरह दोनों अत्यंत बेमेल हैं (देखें नीतिवचन 11:22)। मोती पैरों के नीचे लताड़े जाने थे, क्योंकि सूअरों को उनकी कीमत का महत्व पता नहीं है (5:13; इब्रानियों 10:29 देखें)। यदि कोई सूअरों को मोती खिलाने की कोशिश करता तो ये जानवर बदला लेने के लिए उस आदमी को ही फाड़ देते।

फिर से, ''पवित्र वस्तु'' की तरह ''मोतियों'' का अर्थ राज्य का शुभ समाचार है (देखें 13:45, 46)।[10] इस संदर्भ में कुत्ते और सूअर अन्यजातियों को नहीं बल्कि अधार्मिक लोगों को कहा गया है। वे उन सब लोगों के लिए है जो सुसमाचार के विरोधी हों, चाहे वह किसी भी जाति या देश के हों। वे संदेश के अयोग्य हैं क्योंकि वे पवित्र वस्तु के साथ अपमानजनक ढंग से व्यवहार करते हैं (देखें नीतिवचन 9:7–9; 23:9)।

बाद में यीशु ने अपने चेलों को बताया कि यदि वे किसी नगर या घर में जाएं और उनका संदेश वहां ठुकरा दिया जाए, तो वे ''अपने पांवों की धूल झाड़कर'' किसी दूसरे नगर या घर में चले जाएं जहां उन्हें और अधिक मानने वाले लोग मिल सकें (10:13, 14)। जब भी पौलुस को अविश्वासी यहूदियों का विरोध सहना पड़ा, उसने उन्हें छोड़कर संदेश ग्रहण करने वाले अन्यजातियों को दे दिया (प्रेरितों 13:45–52; 18:5–7; 28:23–28)।

प्रार्थना में बने रहना (7:7-11)

7''मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा। ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। 8क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; जो ढूंढ़ता है, वह पाता है, और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा। 9तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे? 10या मछली मांगे, तो उसे सांप दे? 11अतः जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?''

यीशु प्रार्थना के विषय पर लौट आया, जिसकी चर्चा पहले उसके उपदेश में की गई है (6:5–15)। उसने प्रार्थना करने की तीन शिक्षाओं के साथ बात का आरम्भ किया, ''मांगो,'' ''ढूंढ़ो,'' और ''खटखटाओ'' (7:7, 8)। ये अवश्य माननीय बातें दो उदाहरणों से पहले आती हैं जिनमें ''रोटी'' और ''मछली'' के लिए पुत्र की विनतियों पर पिता का जवाब है (7:9, 10)। प्रार्थना पर उसकी टिप्पणियां छोटे से बड़े तर्क के साथ समाप्त होती हैं (''और भी इतना'') जो

स्वर्गीय पिता के प्रेम पर ज़ोर देता है।

आयतें 7, 8. इन तीन अवश्य माननीय अलग-अलग बातों के साथ यीशु ने प्रार्थना के महत्व पर ज़ोर दिया। **मांगो** प्रार्थना का सामान्य हवाला है (देखें 21:22; मरकुस 11:24; यूहन्ना 14:13, 14; 15:7, 16; 16:23, 24), जबकि **ढूंढ़ो** और **खटखटाओ** का इस्तेमाल अलंकारिक अर्थ में किया गया है (देखें प्रकाशितवाक्य 3:20)।[11] आयत 7 में इस्तेमाल किए गए वर्तमान अवश्य माननीय क्रियाएं निरन्तर कार्य का सुझाव देती हैं। JNT में "मांगते रहो ... ढूंढ़ते रहो ... खटखटाते रहो" है।

लूका ने प्रार्थना में बने रहने के यीशु के दो दृष्टांत दिए जो "ढूंढ़ने" और "खटखटाने" के विषय से जुड़े हैं। लूका 18:1-8 एक विधवा की तस्वीर दिखाता है कि किसी अधर्मी न्यायी से न्याय ढूंढ़ती रही और अन्त में उसे अपनी ज़िद का प्रतिफल मिल गया। लूका 11:5-8 में एक आदमी आधी रात को किसी अचानक आए अतिथि के लिए कुछ रोटी उधार लेने के लिए अपने मित्र के घर चला गया। उसकी ढिठाई के कारण उसका मित्र बिस्तर से बाहर आया और उसने उसे जो चाहिए था, वह दिया।

यीशु ने प्रतिज्ञा की, "**क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; जो ढूंढ़ता है, वह पाता है, और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा।**" परमेश्वर प्रार्थना की हमारी विनतियों का बुरा नहीं मानता, न ही वह उन्हें नज़रअन्दाज़ करता है। वह हमारे लिए दरवाजा खुला रखता है और हमें हमारी ज़रूरत के अनुसार दिए बिना कभी खाली नहीं भेजता। याकूब ने कहा है कि परमेश्वर "बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है" (याकूब 1:5)।

आयतें 9, 10. यह दिखाते हुए कि सांसारिक पिता किस प्रकार से अपने बच्चों की विनतियों का जवाब देते हैं, दो और उदाहरण हैं (इन्हें प्रश्नों के रूप में दिखाया गया है)। पहले, यीशु ने पूछा, "**तुम में से ऐसा कौन मुनष्य है, कि यदि उसका पुत्र उससे रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे?**" इस प्रश्न का अपने आप में स्पष्ट उत्तर यह है कि "कोई नहीं!" "रोटी" ("ब्रैड"; NIV) और "पत्थर" के बीच सम्बन्ध उसके गोल आकार के होने का ही था। जंगल में यीशु की पहली परीक्षा से भी इस तुलना का सुझाव दिया गया है, जहां शैतान द्वारा यीशु से पत्थरों को रोटी में बदलने का आग्रह किया गया था (4:3)।

दोहराव की कला का इस्तेमाल करते हुए यीशु ने ऐसा ही एक प्रश्न पूछा: "**या मछली मांगे, तो उसे सांप दे?**" फिर, उत्तर साफ़-साफ़ "नहीं" है! इस वचन को सरसरी तौर पर पढ़ने पर ध्यान में विषैला सांप आ जाता है, जो बच्चे को घायल या घात कर दे-और यह सही हो सकता है। आखिर *ophis* शब्द विशेष रूप से नये नियम में सांपों के लिए ही है (मरकुस 16:18; 1 कुरिन्थियों 10:9)। परन्तु एक और सम्भावना यह है कि यहां पर यह हवाला गलील की झील में पाई जाने वाली बाम के समान मछली के सम्बन्ध में है।[12] ऐडविन फर्मेज ने तर्क दिया है कि कई प्राचीन संस्कृतियों में सांप जैसी लगने वाली मछली को सांप कहना आम बात थी।[13] यहां पर "सांप" ऊपर दिए पत्थर की तरह खाने के अयोग्य ही होगा। लैव्यव्यवस्था 11:9-12 में यहूदियों को ऐसी किसी भी मछली को खाने की मनाही थी जिसके पंख व चोंयटें न हों।

रोटी और मछली गलील की झील के आस-पास के घनी आबादी वाले भागों में पाए जाने वाले आम भोजनों को दर्शाता है। तब यीशु ने आश्चर्यकर्म के द्वारा पांच हज़ार और चार हज़ार

लोगों को खिलाया था, जब उनके भोजन में रोटी और मछली ही थी (14:15–21; 15:32–38)। लूका के विवरण में जोड़ा गया है कि यीशु ने यह भी कहा, ''या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छू दे?'' (लूका 11:12)। बिच्छू ''रेंगने वाली चीज़ों'' की अशुद्ध किस्म से सम्बन्धित है (लैव्यव्यवस्था 11:29–31) और इस कारण केवल इसी आधार पर उन्हें भोजन के रूप में खाने की मनाही थी। बिच्छुओं की एक प्रजाति का बाहरी भाग सख्त खोपड़ी वाला होता है जो उनके सोने पर इकट्ठा होने पर अण्डों जैसा लगता है। यदि कोई इस प्रकार के बिच्छु को अण्डा समझने की गलती करे और उसे खाने के लिए पकाने के लिए उठाए तो उसे ज़ोरदार घाव हो सकता है।

आयत 11. जो निष्कर्ष यीशु ने निकाला वह स्पष्ट और ज़बर्दस्त है: **''अतः जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा!''** यीशु ने यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ दयालु रहता है, छोटे से बड़ा तर्क इस्तेमाल किया। ऐसा करते हुए उसने अपने सुनने वालों को ''बुरे'' (*ponēros*) कहा। उपदेश में आठ बार आने वाला यह शब्द (5:11, 37, 39, 45; 6:13, 23; 7:17, 18) यहां पर परमेश्वर की तुलना में इस्तेमाल किया गया है जो पूर्ण रूप में ''अच्छा'' है (19:17; देखें 5:48)। परमेश्वर के साथ तुलना करने पर, अच्छे से अच्छे माता-पिता भी बुरे दिखाई देते हैं।[14]

प्रेम करने वाला कोई माता-पिता बच्चे के साथ इतनी क्रूरता से पेश नहीं आएगा कि वह रोटी या मछली मांगे जाने पर पत्थर या सांप दे। अच्छे माता-पिता अपने बच्चों के लिए केवल बढ़िया से बढ़िया चीज़ें देना चाहते हैं। मानवीय माता-पिता अपने बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करना चाहते हैं, इस कारण हम जानते हैं कि हमारा स्वर्गीय पिता निश्चय ही अपने बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करेगा (फिलिप्पियों 4:19; याकूब 1:17; 1 पतरस 3:12; 5:7; 1 यूहन्ना 5:14, 15)। परमेश्वर अपने बच्चों को आशीष देना चाहता है। पवित्र शास्त्र इस बात पर कोई सीमा नहीं लगाता कि वह उनके लिए जो विश्वास से मांगते हैं और उसकी इच्छा पर रहते हैं क्या करने को तैयार है।

यीशु के मानवीय उदाहरण (रोटी और मछली), शारीरिक हैं इस कारण ''अच्छी वस्तु'' वाक्यांश की व्याख्या शारीरिक ढंग से करना आसान है। परन्तु परमेश्वर अपने बच्चों की शारीरिक आवश्यकताओं के लिए तो देता है (6:33), वह विशेष उनकी आत्मिक आवश्यकताओं के लिए देता है। ''अच्छी वस्तुओं'' की जगह लूका 11:13 में ''पवित्र आत्मा'' है। चेलों का मांगना, ढूंढ़ना और खटखटाना विशेषकर उस आत्मिक सामर्थ से सम्बन्धित हो सकता है जो इस उपदेश में पाई जाने वाली चुनौती पूर्ण शिक्षाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक होनी थी (देखें रोमियों 8)।

सारांश: सुनहरी नियम (7:12)

12''इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की शिक्षा यही है।''

आयत 12. पहले कही गई बातों के एक सारांश के रूप में, यीशु ने दूसरों के साथ व्यवहार

करने की एक रूपरेखा दी, जिसे व्यापक तौर पर ''सुनहरी नियम'' के रूप में जाना जाता है। बुनियादी सिद्धांत को मनुष्यों के बीच अब तक के सबसे ऊंचे नैतिक नियम के रूप में इसे अविश्वासियों द्वारा भी माना गया है। एशिया, यूनानी-रोमी और यहूदी पृष्ठभूमियों वाले साधुओं और दार्शनिकों ने ऐसी ही शिक्षाएं दी हैं। परन्तु उनके अधिकतर नियम नकारात्मक रूप में कहे गए हैं।

चीनी दार्शनिक कंफ्युशियस ने कहा, ''जो तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे साथ हो, वह दूसरों के साथ न करो।''[15] यूनानी दार्शनिक सुकरात ने शिक्षा दी, ''दूसरों के हाथों दुख मिलने पर जो भी बात तुम्हें क्रोध दिलाए, उसे दूसरों के साथ न करो।''[16] यूनानी दार्शनिक अरस्तू से जब मित्रों के साथ व्यवहार का तरीका पूछा गया तो उत्तर मिला, जैसा ''हम चाहते हैं कि वे हमारे साथ करें।''[17] रब्बी हिलेल ने एक अन्यजाति को जिसने यहूदी मत धारण किया था, कहा बताया जाता है, ''जो बात तुम्हें घृणित लगती है वह अपने पड़ोसी के साथ न करो।''[18] बाइबल की अप्रामाणिक पुस्तक तोबीट में सलाह है, ''तुम्हें जो बात अप्रिय है, उसे किसी दूसरे के साथ नहीं करोगे।''[19] इसके अलावा प्रवक्ता ग्रंथ की पुस्तक में कहा गया है, ''अपने पड़ोसी की भावनाओं को अपनी भावनाओं से जांचो, और हर मामले में विचारवान रहो।''[20] अरिस्तीयस के पत्र में कहा गया है, ''जहां तक तुम नहीं चाहते कि बुराइयां तुम तक आएं, परन्तु हर आशीष में भागीदारी चाहते हैं, (यह बुद्धिमत्ता होगी) यदि तुम इसे अपने साथ व्यवहार में लाओ।''[21]

यीशु की ताड़ना को सकारात्मक अर्थ में व्यक्त किया गया है और इसके काम किसी विशेष समूह (जैसे किसी के मित्रों) तक सीमित नहीं हैं: ''**तुम भी उनके साथ वैसा ही करो, जैसा तुम चाहते हो वे तुम्हारे साथ करें**।''[22] यदि यीशु ने यह बात नकारात्मक विचार में कही होती, ''तो सुनहरी नियम कुछ न करने से पूरा हो सकता था। सकारात्मक रूप हमें दूसरों की ओर से कार्य करने की प्रेरणा देता है; यह हमें दूसरों के लिए वे सब बातें करने को कहता है, जो हमें अपने लिए की जानी अच्छी लगती हैं।''[23] जैक पी. लुईस ने कहा, ''इस नियम का सकारात्मक रूप व्यक्ति को [धन्य] सामरी की गतिविधियों से तुलना के योग्य बनने के लिए बांधता है (लूका 10:30से)।''[24]

यीशु यह सुनहरी नियम देते हुए **व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं** के सार रूप में देने के लिए एक नई व्यवस्था नहीं दे रहा था। बाद में उसने ''अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम'' (व्यवस्थाविवरण 6:5), और ''पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना'' (लैव्यव्यवस्था 19:18) रखने की पुराने नियम की आज्ञाओं के सम्बन्ध में ऐसी ही बात कही। उसने कहा, ''ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार हैं'' (22:40)। सुनहरी नियम का अपना नकारात्मक संस्करण देने के बाद रब्बी हिलेल ने आगे कहा, ''यह सम्पूर्ण व्यवस्था है और शेष व्याख्या है।''[25] यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यीशु द्वारा बताया गया सुनहरी नियम ''पड़ोसी से अपने समान प्रेम'' रखने की आज्ञा से बिल्कुल मिलता-जुलता है (देखें रोमियों 13:8-10; गलातियों 5:14)।

आयत 12, जिसका परिचय **इस कारण** शब्द के द्वारा करवाया गया है, पहाड़ी उपदेश के सारांश का काम कर सकती है। व्यवस्था और यीशु की शिक्षाओं को सुनहरी नियम की ऐनक में से देखा जाना चाहिए। ''व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं'' 5:17 में पहले आए वाक्यांश ''व्यवस्था

या भविष्यवक्ताओं'' वाक्यांश से मिलता-जुलता है। ये हवाले उपदेश के मुख्य भाग के लिए कोष्ठकों का काम करते हैं (5:17-7:12)।

अन्तिम शिक्षाएं (7:13-27)

इस उपदेश के अन्त में यीशु ने चेलों को उसकी शिक्षा को मानने की ताड़ना दी। उसने उन्हें दो अलग-अलग मार्गों (7:13, 14), वृक्षों की दो श्रेणियां (7:15-20), चेलों की दो किस्में (7:21-23) और दो प्रकार के भवन बनाने वाले (7:24-27) की एक शृंखला दी जिसमें से उन्हें अन्तर चुनना आवश्यक था। आर. टी. फ्रांस ने लिखा है, ''प्रत्येक में वास्तविक और छदम के बीच अन्तर है, और यह वास्तविकता न केवल चेले के काम में बल्कि उसके काम में भी पाई जाती है।''[26] ज़ोर सही जवाब देने पर दिया जाता है। यूनानी क्रिया शब्द *poieō* जिसका अनुवाद आम तौर पर ''बनाना'' या ''करना'' किया जाता है, आज्ञा मानने से सम्बन्धित इस भाग में नौ बार मिलता है।

दो अलग-अलग मार्ग (7:13, 14)

13''सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुत से हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। 14क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।''

आयतें 13, 14. यीशु ने अपने चेलों से **सकेत फाटक** से प्रवेश करने का आग्रह किया। यहां ''सकेत'' के लिए इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द (*stenos*) ''अत्यन्त कठिनाई'' का सुझाव देता है, जैसे किसी को ''ढक्कन में ठूसा'' जा रहा हो। बन्द फाटक के दृष्टांत की अपनी चर्चा में यीशु ने कहा, ''सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे प्रवेश करना चाहेंगे, और न कर सकेंगे'' (लूका 13:24)।''यत्न करो'' के लिए यूनानी शब्द (*agōnizomai*) से अंग्रेज़ी भाषा के शब्द ''agonize'' (वेदना) और ''anguish'' (सन्ताप) निकले हैं। अभिप्राय यह कि स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए बहुत प्रयास आवश्यक हैं (देखें 5:20; 19:24)।

प्रवेश करो के लिए यहां इस्तेमाल किए गए शब्द (*eiselthate*) विशेष कार्य की मांग करते हुए अवश्य माननीय सामान्य मनोदशा में है; यह आज्ञा है। जब यीशु ने यह शब्द कहे, तो वे चेतावनी के रूप में नहीं बल्कि ताड़ना या निमन्त्रण के रूप में दिए। वह उन सब का जिन्होंने उसके पास आना था स्वागत कर रहा था।

जो लोग सकेत फाटक में प्रवेश करते हैं वे उस **मार्ग** पर भी चलेंगे जो **कठिन** है। यूनानी शब्द (*thlibō*) के अनुवाद ''सकेत है'' का अर्थ ''संकुचित,'' ''सीमित,'' और ''दुखदायी'' भी हो सकता है। यीशु के चेलों ने जिस मार्ग पर चलना था वह कठिनाइयों, संघर्षों और यहां तक कि सतावों से भरा होना था। फलस्तीन के प्राचीन मार्ग यीशु के रूपक की पृष्ठभूमि का काम करते हैं। रॉबर्ट एच. गुंड्री ने लिखा है, ''तुलनात्मक रूप में सपाट देश में चौड़े मार्ग सफ़र को आसान

बना देते हैं। परन्तु पहाड़ी क्षेत्र के तंग मार्ग सफ़र कठिन बना देते थे।''[27]

यीशु के रूपक में सकेत फाटक और सकेत मार्ग एक दूसरे से कैसे जुड़ते हैं ? फ्रांस ने पूछा क्या '''सकेत फाटक' आरम्भ में है या 'कठिन मार्ग' के अन्त में ? या कठिन मार्ग को शायद फाटक के बीच में से मार्ग के रूप में देखा जाए, ताकि दोनों रूपक मिल जाएं ?''[28] इन प्रश्नों के उत्तर जो भी हों, यीशु की बात स्पष्ट है। उसने लोगों से जीवन के दो वैकल्पिक मार्गों में से चुनने को कहा, जिनमें दोनों की मंजिलें नाटकीय रूप में अलग-अलग हैं: अनन्त **जीवन** और अनन्त **विनाश**।[29] दोनों मार्गों में से हम केवल एक पर ही चल सकते हैं। एक को चुनने पर हमें दूसरे को नकारना आवश्यक है। दोनों का आरम्भ दो अलग-अलग स्थानों पर होता है, दोनों आपस में मिलते नहीं है और एक मार्ग से दूसरे मार्ग तक जाने का कोई शॉटकट नहीं है। इसी जीवन में हमें निर्णय लेना है कि हम किस मार्ग पर चलेंगे और हम किस मंजिल पर पहुंचना चाहते हैं। यदि हम निर्णय लेने से बचना चुनते हैं तो यह सकेत मार्ग पर न चलने का निर्णय है।

यीशु ने अपने सुनने वालों से सकेत मार्ग पर चलने का आग्रह किया क्योंकि विकल्प भयंकर विनाश की ओर ले जाता है, ''**चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है**।'' ''चौड़ा'' के लिए इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द (*euruchōros*) का अर्थ है ''खुला।'' इस मार्ग में कोई शर्त या पाबन्दी नहीं है। यह किसी प्रकार के समर्पण, नैतिकता या आत्मिक परिपक्ता की मांग नहीं करता; परन्तु इसका अन्तिम परिणाम मृत्यु और विनाश है (रोमियों 6:23)। क्योंकि यह चौड़ा और निमन्त्रण देने वाला है, **बहुत से हैं** जो इस पर चलना चुनते हैं, चाहे इसका अन्त मृत्यु है। परमेश्वर के लोग सदा से अल्पमत में ही रहे हैं (देखें उत्पत्ति 6:1-22)।

इन आयतों के सम्बन्ध में डोनल्ड ए. हैग्नर ने ध्यान दिलाया कि ''दो मार्गों'' का रूपक आम तौर पर पुराने नियम, दोनों नियमों के बीच के साहित्य, खारे समुद्र की पत्रियों, रब्बियों के साहित्य और अपोस्टलिक फादर्स के उदाहरण से उद्धृत करते हुए, इस्तेमाल किया जाने वाला अतिश्योक्ति का ढंग है।[30] केवल पुराने नियम में ही परमेश्वर के लोगों का सामना ''आशीष'' और ''श्राप'' (व्यवस्थाविवरण 11:26), ''जीवन और लाभ'' और ''मरण और हानि'' (व्यवस्थाविवरण 30:15), ''यहोवा'' और ''जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा करते थे'' (यहोशू 24:14, 15), धर्म और दुष्टता (भजन संहिता 1:1-6) और ''जीवन का मार्ग'' और ''मृत्यु का मार्ग'' (यिर्मयाह 21:8) में चुनाव करने से होता था।

वृक्षों के दो वर्ग और झूठे भविष्यवक्ताओं का फल (7:15-20)

[15]''झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में वे फाड़ने वाले भेड़िए हैं। [16]उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या लोग झाड़ियों से अंगूर, या ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं ? [17]इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है। [18]अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है। [19]जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता वह काटा और आग में डाला जाता है। [20]इस प्रकार उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।''

आयत 15. यीशु दो अलग-अलग मार्गों से वृक्षों के दो वर्गों अर्थात अच्छे वृक्ष और बुरे वृक्ष में चला गया। वह **झूठे भविष्यवक्ताओं** के विरुद्ध चौकस कर रहा था। अगली ताड़ना से स्पष्ट सम्बन्ध यह है कि "झूठे भविष्यवक्ता" आकर लोगों को "चौड़े मार्ग" में चलने के लिए फुसलाएंगे।

झूठे भविष्यवक्ताओं के विरुद्ध चेतावनी इस्राएल के आधार में पीछे चली जाती है। मूसा ने लोगों के लिए झूठे भविष्यवक्ता की पहचान करवाई, जब उसने कहा, "जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे; तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए, तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ नहीं; परन्तु उस नबी ने वह बात अभिमान करके कही है, तू उस से भय न खाना" (व्यवस्थाविवरण 18:22)। अन्य शब्दों में जब कोई व्यक्ति जो नबी होने का दावा करता है, कोई भविष्यवाणी करता है जो पूरी नहीं हुई, तो साफ हो जाता है कि वह झूठा नबी है।

वे झूठे नबी कौन हैं जिनकी यीशु ने बात की ? क्योंकि यीशु यहूदी स्रोताओं से बात कर रहा था, इस कारण उसके मन में वही झूठे नबी होंगे जो मसीहा होने का दावा करते हैं। बाद में उसने अपने चेलों को बताया, "बहुत से झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे ... झूठे मसीह और झूठे भविष्यवक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिह्न, और अद्‌भुत काम दिखाएंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें" (24:11, 24)। मसीह होने के ऐसे दावा करने वाले पहली सदी के आस-पास खड़े हुए, यहां तक कि उन्होंने रोमियों को खदेड़ने के लिए सेनाएं भी इकट्‌ठी कर लीं। परन्तु जब वे और उनकी सेनाएं हार गईं, तो यह स्पष्ट हो गया कि वे ऐसे अगुवे थे, जिन्हें न तो परमेश्वर द्वारा बुलाया गया था और न उनका अभिषेक हुआ था। प्रेरितों के काम में तीन ऐसे ढोंगियों का उल्लेख है: थियूदास, यहूदा गलीली और मिसरी (जिसका नाम नहीं दिया गया) (प्रेरितों 5:36, 37; 21:38)।[31]

यीशु विशेषकर अपने चेलों को राज्य (कलीसिया) की राह देखने को कह रहा था इस कारण उसने उन्हें मसीहियत में झूठे शिक्षकों के खतरों से भी आगाह किया हो सकता है। कलीसिया के आरम्भिक दिनों में, नये नियम के कैनन के पूरा होने से पूर्व, भविष्यवाणी का दान मण्डलियों की स्थापना और विकास के लिए आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 12:10, 28; 14:1-40)। कलीसिया "प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नेव पर" (इफिसियों 2:20), अर्थात मसीह और उसकी इच्छा की परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई उनकी शिक्षा के आधार पर बनी। मसीह ने विश्वासयोग्य, परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं को भेजा। परन्तु झूठे शिक्षकों ने अपने ही विचारों को और झूठी भविष्यवाणियों को डालते हुए उनकी नकल करनी चाही। इसलिए बोले गए संदेश का अवलोकन किया जाना आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 12:10)। पौलुस ने थिस्सलुनीके के लोगों को उपदेश दिया, "आत्मा को न बुझाओ। भविष्यवाणियों को तुच्छ न जानो। सब बातों को परखो; जो अच्छी है उसे पकड़े रखो" (1 थिस्सलुनीकियों 5:19-21)।

झूठे नबी कलीसिया के आरम्भिक वर्षों में पाए जाते थे और पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के ऐल्डरों को चेतावनी दी थी, "मैं जानता हूं किमेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे" (प्रेरितों 20:29)। पतरस ने भी चेतावनी दी, "तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे" (2 पतरस 2:1)। प्रेरित यूहन्ना जिसने पतरस के काफ़ी बाद में लिखा होगा,

उसने कहा, ''बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)। यूहन्ना ने यह भी लिखा, ''यदि कोई तुम्हारे पास आए और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो। क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उस के बुरे कामों में साझी होता है'' (2 यूहन्ना 10, 11)। वह उन लोगों की विशेष रूप से बात कर रहा था जो यह सिखा रहे थे कि मसीह देह में होकर नहीं आया। मसीहियत में झूठे भविष्यवक्ताओं और उपदेशकों की समस्या कलीसिया के आरम्भ के बाद से केवल बड़ी ही है।[32]

यीशु ने कहा कि झूठे भविष्यवक्ता **भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्दर से वे फाड़ने वाले भेड़िए** [होंगे] **हैं**। झूठे भविष्यवक्ताओं का धोखा देने वाला स्वभाव स्पष्ट है। इन उपदेशकों ने चरवाहे बनकर आना था, न कि भेड़ें। यह रूपक उन्हें भेड़ों की खाल पहने हुए, अर्थात सचमुच में चरवाहों के रूप में दिखाता है। यह पहनावा प्राचीन नबियों वाला है जो रोयंदार वस्त्र भी पहनते थे जिनमें भेड़ों की खाल भी होती थी (2 राजाओं 1:8; जकर्याह 13:4; मत्ती 3:4; इब्रानियों 11:37)।

ये धोखेबाज विशेषकर खतरनाक थे, क्योंकि वे मसीह के सच्चे सेवक होन का दावा करते थे जो वास्तव जिन्हें सचमुच में भेड़ों की परवाह है, परन्तु उनका पूरा उद्देश्य भेड़ियों की तरह झुंड को खाना या बर्बाद करना और नष्ट करना होता था (देखें यूहन्ना 10:10, 12; प्रेरितों 20:29; 2 कुरिन्थियों 11:13-15; 2 तीमुथियुस 3:13)। वे अपने विश्वास में बेईमान थे और उन्हें व्यक्तिगत लाभ पाने के द्वारा प्रेरणा मिलती थी।

आयत 16. यीशु ने घोषणा की, ''**उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे**।'' हम झूठे नबियों को कैसे पहचान सकते हैं? एक अर्थ में उसने कहा ''उनके फलों को देखो।'' फल से पता चलता है कि पेड़ किस चीज़ का है क्योंकि यह उसी का फल देता है। यीशु ने कहा कि **झाड़ियों से अंगूर** और **ऊंट कटारों से अंजीर** नहीं उगती। इसके बजाय अंगूर बिना कांटे वाली अंगूर की बेल पर लगते हैं और अंजीर केवल अंजीर के पेड़ों पर लगते हैं।

आयतें 17, 18. यीशु ने आगे कहा, ''**इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है**।'' हिल ने समझाया, ''ये आयतें किसी बात पर ज़ोर देने के सामी ढंग को दर्शाती हैं: बात सकारात्मक ढंग से कही गई (17) और फिर नकारात्मक ढंग से (18)।''[33] झूठे नबियों का बुरा फल उनकी अनैतिक जीवन शैली या उनके द्वारा सिखाए गए लोगों के भ्रष्ट जीवनों को कहा गया हो सकता है।[34] इसमें उनकी झूठी शिक्षा भी शामिल है (देखें 12:31-37; लूका 6:43-45)। फल बुरा है क्योंकि पेड़ बुरा है।

आयतें 19, 20. यीशु ने यह कहते हुए समाप्त किया, ''**जो-जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता वह काटा और आग में डाला जाता है**।'' उसके शब्द यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शब्दों को दोहराते हैं (3:10 पर टिप्पणियां देखें)। फलदार पेड़ लगाने वालों के लिए पेड़ों को लगातार छांटते रहना और फल न देने वाली टहनियों को काट देना आवश्यक रहता है। उन्हें फलदार पौधों के लिए जगह बनाने के लिए फल न देने वाले पौधों को भी काट देना आवश्यक होता है (देखें यूहन्ना 15:2, 6)। इसी प्रकार से न्याय के दिन पर झूठे भविष्यवक्ताओं और उपदेशकों को अलग करके उन्हें अनन्त आग में डाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:10)।

इस समय हो सकता है कि लगे कि वे न्याय से बच रहे हैं, परन्तु ''दण्ड की आज्ञा ... आने में कुछ भी देर नहीं, और उनका विनाश उंगता नहीं'' (2 पतरस 2:3)। **उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे** ज़ोर देने के लिए दोहराया गया है।

दो प्रकार के चेले (7:21-23)

[21]''जो मुझे हे प्रभु! हे प्रभु, कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। [22]उस दिन बहुत से मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं किए? [23]तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा मैंने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ।''

आयत 21. यीशु ने आज्ञा मानने वाले और आज्ञा न मानने वाले चेलों की दो अलग-अलग किस्मों की तुलना की। उसके शब्द झूठे भविष्यवक्ताओं के विषय को जारी रखते हुए कहे गए लगते हैं जो अपने आपको धोखे में रखे हुए थे। वे न केवल उन्हें धोखा दे रहे थे जिन्हें वे सिखा रहे थे, बल्कि अन्त में वे अपने आपको भी धोखा दे रहे थे।

यीशु ने माना कि झूठे नबी भी कई बार सच बोल देते हैं। उनका यीशु को ''हे प्रभु, हे प्रभु'' कहना उनके द्वारा उसे अधिकार और ईश्वरीयता को पहचानने का संकेत था। उनका अधिकार आरम्भिक कलीसिया के इस अंगीकार से मेल खाता है कि ''यीशु प्रभु है'' (रोमियों 10:9; 1 कुरिन्थियों 12:3; फिलिप्पियों 2:11)। लूका 6:46 में यीशु ने पूछा, ''जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहते हो?'' ''हे प्रभु, हे प्रभु'' अंगीकार अपने आप में पर्याप्त नहीं है। यहां तक कि स्वभ्रमित आश्चर्यकर्म करने वाले ही यीशु को इन शब्दों के साथ पुकार तो सकते हैं पर वे **स्वर्ग के राज्य में प्रवेश** नहीं करेंगे। यीशु ने कहा कि केवल वही **प्रवेश** कर सकते हैं जो परमेश्वर **की इच्छा** को पूरा करते हैं। जो लोग उद्धार पाना चाहते हैं उन्हें निश्चित शर्तों को पूरा करना आवश्यक है यानी उन्हें परमेश्वर की इच्छा को जानने और इसे पूरा करने की जिम्मेदारी है। यीशु ने कहा, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (यूहन्ना 14:15)। यूहन्ना ने बाद में लिखा, ''और परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; ...'' (1 यूहन्ना 5:3)।

आयत 22. यीशु द्वारा दिखाए गए दृश्य में झूठे नबी (आज्ञा न मानने वाले चेले) **उस दिन**[35] अर्थात न्याय के दिन यीशु को हिसाब दे रहे थे।[36] झूठे नबियों की **भविष्यवाणी** करने, **दुष्टात्माओं को** निकालने और **बहुत से आश्चर्यकर्म** करने की योग्यता की यीशु द्वारा न तो पुष्टि हुई और न उसका इनकार किया गया। परन्तु ''**क्या हम ने नहीं किया**'' शब्दों में एक पक्के उत्तर का पूर्वाभास है। कम से कम उन्हें यह लगा कि उन्होंने ऐसा किया है। यह सम्भव है कि उन्होंने यीशु के **नाम** लेते हुए यह आश्चर्यकर्म वास्तव में किए। मरकुस 9:38, 39 में प्रेरित यूहन्ना ने यीशु से एक आदमी की शिकायत की, जो उसके नाम से दुष्टात्माओं को निकाल रहा था, परन्तु उनके समूह वाला चेला नहीं था। प्रेरितों 3:6 और 9:34 में प्रेरितों ने उन लोगों पर जिन्हें उन्होंने

सफलतापूर्वक चंगाई दी, यीशु के नाम को बताया था। एक अवसर पर कुछ यहूदी अघोरियों ने अपने लाभ के लिए यीशु के नाम का इस्तेमाल किया था, पर उनकी योजना उन्हीं पर उल्टी पड़ गई थी। दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति ने उन्हीं पर हमला करके उन्हें नंगा और घायल कर दिया था (प्रेरितों 19:13-16)।

आयत 23. यहां हम आज्ञा न मानने वालों का न्याय करते हुए यीशु के निर्णय को देखते हैं। इस संदर्भ में **खुलकर कह दूंगा** शब्द एक कानूनी घोषणा का संकेत देता है। बेशक इन लोगों का मानना था कि वे यीशु के चेले हैं और उन्हें लगता था कि उन्होंने बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म किए हैं, पर वे उसके असली चेले नहीं थे।

यीशु ने उन्हें साफ़ कह दिया, "**मैंने तुम को कभी नहीं जाना।**" यही भावना पांच मूर्ख कं ु वारियों के उसके दृष्टांत में व्यक्त की गई है (25:12; देखें लूका 13:25)। यीशु के यह कहने का क्या अर्थ था? यह घोषणा कि "मैंने तुम को कभी नहीं जाना" ठुकराने का एक फार्मूला है (देखें 26:70, 72, 74)। पौलुस ने कहा, "प्रभु अपनों को पहचानता है।" फिर उसने कहा, "जो कोई प्रभु का नाम लेता है, वह अधर्म से बचा रहेगा" (2 तीमुथियुस 2:19)।

"**हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ**" शब्द भजन संहिता 6:8 को दिखाते हैं। भजन संहिता के शब्द एक दुख उठाने वाले धर्मी द्वारा अपने सताए जाने वाले को कहे गए हैं न कि इस संदर्भ की तरह न्याय करने वाले की तरह दुष्ट लोगों को। "मेरे पास से चले जाओ" संकेत देता है कि आज्ञा न मानने वालों को मिला दण्ड प्रभु की उपस्थिति से बाहर निकाले जाने का है (2 थिस्सलुनीकियों 1:9, 10; प्रकाशितवाक्य 21:7, 8; 22:14, 15)। अपने मसीह के चेले होने का दावा करने के बजाय, इन छदम सेवकों ने "कुकर्म करना" जारी रखा। यूनानी भाषा में "करने वालों" के लिए एक वर्तमान कृदंत है जो निरन्तर कार्य का संकेत देता है। बेशक उन्होंने कई भले काम करने का दावा किया पर वे आज्ञा न मानने वाले जीवन जी रहे हैं।

दो प्रकार के बनाने वाले (7:24-27)

24"इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा, जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। 25और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर से टकराईं, फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उस की नींव चट्टान पर डाली गई थी। 26परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की समान ठहरेगा, जिसने अपना घर बालू पर बनाया। 27और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर से टकराईं और वह गिर कर सत्यानाश हो गया।"

आयत 24. यीशु ने अपने उपदेश को सुनने वालों को दो तरह के (या बनाने वालों) का दृष्टांत देकर समाप्त किया। इसमें उसने **जो कोई मेरी ये बातें सुनकर** दो बार कहा (7:24, 26)। प्रभु की बातें वे आधार हैं जिन पर लोगों को अपना चरित्र बनाना चाहिए। केवल सुनना ही काफ़ी नहीं है; उसकी बातों को **मानना** भी आवश्यक है। बाइबल बार-बार केवल "सुनने" के विपरीत "करने" के महत्व पर ज़ोर देती है। याकूब ने कहा कि जो व्यक्ति केवल "वचन का सुनने

वाला'' है और ''करने वाला'' नहीं वह अपने आपको धोखा दे रहा है (याकूब 1:22-25)। केवल वचन को करने वाले ही आशीष पाएंगे (देखें प्रकाशिवाक्य 1:3)।

यीशु ने उसकी बात मानने वालों की तुलना **उस बुद्धिमान मनुष्य** से की **जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।** ''चट्टान'' (*petra*) ''एक बड़ी चट्टान'' या ''ठोस आधारशिला'' है। ऐसी चट्टान स्थिर, अडोल और पक्की नींव बनाती है। तूफ़ान की मार पड़ने पर बुद्धिमान का घर खड़ा रहता है। चट्टान पर बनाना यीशु की शिक्षा को मानने की तरह है। जब हम अपना आत्मिक घर उसकी सच्चाई की आधारशिला पर बनाते हैं, तो जीवन के तूफ़ानों के हमें बुरी तरह से घेर लेने पर हमारा विश्वास हमें स्थिर और अडोल रखेगा।

आयत 25. यीशु ने आगे कहा, ''**और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर से टकराईं, फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उस की नींव चट्टान पर डाली गई थी**।'' यूनानी भाषा में (*prosepesan ... epesen*) शब्दों के खेल का संकेत मिलता है। लियोन मौरिस ने दृष्टांत के इस भाग का अनुवाद इस प्रकार किया है: ''आन्धियां घर के विरुद्ध *आईं,* पर यह नहीं *गिरा*।''[37] यीशु की बात की पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में, माउंस ने कहा कि ''यह रूपक फलस्तीन की वातावरण की परस्थितियों से मिलता है। देश में साल के अधिकतर भाग में सूखा रहता है, परन्तु बारिशों के बाद, अचानक पानी की धाराएं सुखे दर्रों में भर आती और अपने रास्ते में आने वाली किसी भी चीज़ को बहा ले जाती।''[38] पहाड़ी उपदेश देने के समय यीशु गलील की झील के निकट था; और यह स्थिति कहानी की पृष्ठभूमि के लिए एक और सम्भावना देती हो सकती है। विलकिन्स का प्रस्ताव है:

> गलील की झील के तट पर बाढ़ के बाद जमी कछाली गर्मी के महीनों में ऊपर से कड़क होती थी। परन्तु बुद्धिमान बनाने वाला ऐसी ऊपरी स्थिति से मूर्ख नहीं बनता था। वह कई बार नींव नीचे तक डालने के लिए ऊपरी रेत को दस दस फुट नीचे खोदता, और वहां अपने घर की नींव बनाता [लूका 6:46-49]। सर्दियों की बारिश आने पर, यरदन नदी के किनारों के ऊपर से बहता हुआ पानी झील में चला जाता, जिससे कछाली के ऊपर बने हुए घर बाड़ में टिके रह सकते होंगे।[39]

आयतें 26, 27. इसके विपरीत दृष्टांत में **निर्बुद्धि मनुष्य** ने अपना घर **बालू पर बनाया।** बालू अस्थिर, लगातार हिलने वाली और बाढ़ से आसानी से बह जाने वाली होती है। निर्बुद्धि मनुष्य के घर पर तूफ़ानों की मार पड़ने पर, **वह गिरकर सत्यानाश हो गया।** आम तौर पर लोग ''मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई के उन के भ्रम की युक्तियों और चतुराई'' को मानकर अपने आत्मिक घर रेत पर बना लेते हैं (इफिसियों 4:14)। उनका विश्वास विचारों, अनुमानों और कथाओं पर होता है (देखें 2 तीमुथियुस 4:1-4)। यीशु ने स्पष्ट किया कि हमारे आत्मिक घर परखे जाएंगे। चट्टान के ऊपर बने घर न्याय की अन्तिम परीक्षा में खड़े रहेंगे। समय की बहने वाली रेत के ऊपर बने घर ''उस दिन'' खड़े नहीं रह पाएंगे (भजन संहिता 1:6; 127:1; मत्ती 15:13)।

भीड़ का आश्चर्य (7:28, 29)

[28]जब यीशु ये बातें कह चुका, तो ऐसा हुआ कि भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई। [29]क्योंकि वह उनके शास्त्रियों के समान नहीं, परन्तु अधिकारी के समान उन्हें उपदेश देता था।

आयत 28. जब यीशु ये बातें कह चुका या इसके जैसे शब्द मत्ती में पांच बार मिलते हैं (7:28; 11:1; 13:53; 19:1; 26:1), जो यीशु की शिक्षा के पांच भागों के अन्त का संकेत है। इस उपदेश में उसके पूरे संदेश की बातों की मूल बातें उसके संदेश के शेष भाग अर्थात उसकी व्यक्तिगत सेवकाई के दौरान दिए गए।

आयत 29. जिन लोगों ने यह उपदेश सुना वह यीशु की बातों से चकित रह गए। **क्योंकि वह उनके शास्त्रियों के समान नहीं, परन्तु अधिकारी के समान उन्हें उपदेश देता था।** ''अधिकारी'' के लिए यूनानी शब्द (*exousia*) का अर्थ शासन या प्रबन्ध करने के लिए किसी के पास होने वाली शक्ति या अधिकार है (देखें 8:9; 9:6; 10:1; 21:23)। यीशु ने अपने ग्रेट कमीशन में इस शब्द का इस्तेमाल किया (28:18)। शास्त्री लोग पुराने यहूदी विद्वानों के लेखों के लम्बे-लम्बे हवालों को देते हुए शिक्षा देते थे। वे उदाहरण के साथ सहारा दिए बिना अपनी बात कहने से डरते थे। ए. टी. रॉबर्टसन ने लिखा है, ''हमारे पास यहूदी टालमुड मिशनाह और गेमारा में इन उपदेशों के नमूने पड़े हैं जो दोनों के पूरा होने पर, मानवीय इतिहास की हर कल्पना की जा सकने वाली समस्या पर टिप्पणियों का सबसे रूखा और सबसे नीरस संग्रह है।''[40] यहूदी गुरुओं के विपरीत यीशु अपनी सजीव, व्यक्तिगत और उदाहरण सहित शिक्षा परमेश्वर के अधिकारात्मक वचन के रूप में देता था (देखें यूहन्ना 5:27; 10:18; 17:2)। उसे अपनी शिक्षा के समर्थन के लिए किसी मानवीय अधिकार की आवश्यकता नहीं थी। इस उपदेश में ''मैं तुम से कहता हूं'' (5:18, 20, 22, 26, 28, 32, 34, 39, 44; 6:2, 5, 16, 25, 29) और ''मेरी ये बातें'' मुख्य आयतों के द्वारा उसके अधिकार पर ज़ोर दिया गया है (7:24, 26)।

❖❖❖❖❖ सबक ❖❖❖❖❖

''दोष न लगाओ'' (7:1-5)

यीशु ने कपटपूर्ण न्याय करने को गलत ठहराया, जिसमें एक व्यक्ति किसी दूसरे पर दोष लगाता है पर स्वयं उस या उससे भी भयंकर पाप में लिप्त होता है। माउंस ने इस प्रकार कहा है:

> मनवीय स्वभाव हमें अपनी कमियों के बजाय दूसरों की कमियों पर अधिक ध्यान देने को प्रोत्साहित करता है। हम धार्मिकता के बड़े-बड़े मानदण्ड के आधार पर दूसरों का मूल्यांकन करना चाहते हैं जो किसी कारण हमारी अपनी गतिविधि पर लागू नहीं होते।[41]

दूसरों के अपने मूल्यांकन में निष्पक्ष होने के लिए हमें कई दिशा-निर्देशों का पालन करना आवश्यक है।

हमें अपने स्वयं के जीवनों का मूल्यांकन करना चाहिए। हमें अपने आप से पूछना आवश्यक

है कि क्या हम भी वही काम तो नहीं कर रहे, जिन्हें हम दूसरों में अप्रिय मानते हैं। एक व्यक्ति को संसार को बदलने का प्रयास करने से पहले अपने आपको बदल लेना चाहिए।

हमें ध्यान देना चाहिए कि जब दूसरे लोग हमारी आलोचना करते हैं। जो बात वे कह रहे हैं, हो सकता है उसमें कुछ सच्चाई हो जिससे हमें बेहतर लोग बनने में सहायता मिल सके। लोहे में लोहे को तेज़ करने की क्षमता रहती है (नीतिवचन 27:17)।

हमें पहले प्रभाव से बहुत अर्थ नहीं निकाल लेना चाहिए। आमतौर पर किसी व्यक्ति को समझने या जानने के लिए एक मुलाकात काफी नहीं होती। कई बार पहला प्रभाव गलत होता है।

हमें जल्दबाजी में निर्णय नहीं लेने चाहिए। हमें सभी तथ्यों को इकट्ठा करके यह सुनिश्चित करने की कोशिश करनी आवश्यक है कि दूसरों के बारे में हमारे निष्कर्ष सुनी सुनाई बातों पर आधारित नहीं हैं।

हमें नकलची लोग नहीं बनना चाहिए। किसी व्यक्ति का न्याय उसकी जाति, लिंग, या सामाजिक, आर्थिक स्थिति के आधार पर करना गलत है।

हमें अत्यधिक आलोचना करने वाले होने से पहले दूसरे लोगों की परिस्थितियों पर विचार करना चाहिए। हो सकता है कि वह व्यक्ति अपने जीवन में किसी कठिनाई से गुज़र रहा हो या रही हो। शायद हमें वैसे ही व्यवहार करना चाहिए, जैसे उसके जूते पहनकर हम चल रहे हों।

दूसरों का सामना करने पर, हमें अपने इरादों का मूल्यांकन करना आवश्यक है। क्या हमें दूसरों की आत्मिक स्थिति की चिन्ता है (गलातियों 6:1-4) या हम केवल अपने आपको दूसरों से बेहतर दिखाने की कोशिश कर रहे हैं?

सारांश। यीशु का कपटी के किसी दूसरे को दोष लगाने की कोशिश करने का उदाहरण हमारे लिए चेतावनी का काम करता है।

डेविड स्टिवर्ट

सिद्ध पिता (7:7-11)

यीशु ने ध्यान दिलाया कि दोषपूर्ण और पापी होने के बावजूद सांसारिक पिता अपने बच्चों को अच्छे-अच्छे उपहार देते हैं। सांसारिक पिताओं को देखकर हम स्वर्गीय पिता के प्रेम और प्रार्थना में उसके साथ अपने सम्बन्ध को बेहतर समझ सकते हैं।

आज सांसारिक पिता अपने बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिक ऊर्जा खर्च करते हैं। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके पास भोजन, कपड़ा और मकान के अलावा जीवन की बुनियादी आवश्यकताएं हों। इससे भी बढ़कर, पिता शिक्षा के द्वारा अपने बच्चों के बौद्धिक विकास करते हैं। वे उनके होमवर्क और विशेष प्रोजेक्टों में उनके साथ सहायता करते हैं, कमेटियों और स्कूल के बोर्डों की सेवा करते हैं और उनकी पुस्तकों और पढ़ाई का खर्च उठाते हैं। आमतौर पर वे अपने बच्चों के साथ घर के पीछे बेसबॉल, फुटबॉल या बास्केटबॉल खेलकर उनके साथ घण्टों बिताते हैं। पिता उनके साथ बाइबल पढ़कर, उनके साथ प्रार्थना करके, मसीही जीवन बिताते हुए, उन्हें आराधना में ले जाकर और उनकी बाइबल क्लास में पढ़ाकर आत्मिक रूप में अपने बच्चों की सहायता करते हैं। यदि पिता अपने बच्चों की भलाई के लिए ये सब काम करते हैं, तो अपने बच्चों के लाभ के लिए स्वर्गीय पिता इससे कितना अधिक कर सकता है?

सांसारिक पिताओं की तरह, हमारे स्वर्गीय पिता को हमारी चिन्ताओं और आवश्यकताओं का ध्यान है, चाहे वे बड़ी हों या छोटी। वह हमारे मांगने से पहले ही जानता है कि हमारी क्या आवश्यकता है। यह जानते हुए कि यह हमारी भलाई और आत्मिक विकास के लिए है, वह हमें जीवन में कठिनाइयों से संघर्ष करने देता है। कई बार वह हमारे न मांगने पर भी हमारी आवश्यकता के अनुसार देता है और ऐसा वह हमारे उसे धन्यवाद करना भूल जाने के बावजूद करता है। अन्य समयों पर वह हमारी राह देखता है कि हम उससे मांगें, क्योंकि वह चाहता है कि हम उस पर और भरोसा रखें और उस पर अपनी निर्भरता को समझें। हमारे किसी आशीष को गैर जिम्मेदारी से लेने पर हो सकता है कि हमारा पिता आशीष को हमसे छीन ले। परन्तु सांसारिक पिताओं से उलट हमारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है और हमारी देखभाल करने के लिए उसके पास असीमित संसाधन हैं।

डेविड स्टिवर्ट

सुनहरी नियम (7:12)

जिसे ''सुनहरी नियम'' के रूप में जाना जाता है, यीशु ने उसमें समझाया, ''जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो'' (7:12)। अपने प्रतिदिन के जीवनों में हम इस शिक्षा की कई प्रासंगिकताओं को देख सकते हैं।

पहले, उसकी बात की सरलता को देखें। यह किसी के लिए भी माननी बहुत आसान है। यह हम पर व्यक्तिगत रूप से दूसरों के साथ व्यवहार करने के ढंग की जिम्मेदारी डालती है, और यह हमारे साथ उनके व्यवहार से तय नहीं होती। आवश्यक रूप में हम उनसे कह रहे हैं, ''तुम मेरे साथ जैसा भी व्यवहार करो, मैं तुम्हारे साथ आदर और सम्मान के साथ व्यवहार करूंगा, जैसा मैं चाहता हूं कि तुम मेरे साथ करो।''

दूसरा, इसमें किसी भी बात या व्यक्ति को निकाला नहीं गया, क्योंकि इसमें कहा गया है ''जो कुछ'' किसी भी व्यक्ति या व्यवहार के ढंग को जो हमें मिल सकता है छोड़ा नहीं गया; इसमें वे लोग भी हैं जो हमसे घृणा और दुर्व्यवहार करते हैं। हमारे प्रभु ने हमारे लिए नमूना ठहरा दिया कि हम अपने शत्रुओं के साथ भी किस प्रकार से व्यवहार करें (लूका 23:34; 1 पतरस 2:21)।

तीसरा, यह बात सुझाव से कहीं बढ़कर है। यह एक ज़ोर देकर की गई घोषणा अर्थात अपने चेलों के लिए यीशु द्वारा दिया गया आवश्यक माननीय व्यवहार है। हमारे लिए इसे किसी भी और तरीके से समझना असम्भव है। चाहे कितना भी कठिन क्यों न हो हमारे लिए इसे मानना आवश्यक है।

जीने के नियम (7:12)

यदि लोगों का जीवन सुनहरी नियम के साथ हो तो हमारे दिन ईमानदारी और दयालुता से व्यवहार के भरे होंगे। परन्तु कहा जाता है कि लोग मुख्यतया इन सात नियमों में से एक के अनुसार ही चलते हैं:

1. *कीचड़ वाला नियम* इन सबसे छोटा है। यह स्वार्थी और बदनाम लोगों की जीवन शैली

है। जो लोग गंदगी वाली इस फिलॉस्फी पर चलते हैं वे या तो दूसरों पर हुकूमत करेंगे या उन्हें बर्बाद करेंगे।

2. *मिट्टी का नियम* ''प्ले ब्वाय'' अर्थात सुखवादी, अर्थात भौतिकवादी जीवन शैली है। एपिकुरियों की फिलॉस्फी यही थी, ''खाओ-पियो और मज़े करो, क्योंकि कल तो मर ही जाना है।''

3. *लोहे का नियम,* ''जिसकी लाठी उसकी भैंस'' वाला है। यह उन लोगों की फिलॉस्फी थी, जिन्होंने धन्य सामरी के यीशु के दृष्टांत में यात्री को मारा और लूट लिया था।

4. *पीतल का नियम* बदला लेने का नियम है: ''दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम्हारे साथ किया जाता है''; ''आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत।'' इसे ''कानूनी नियम'' भी कहा गया है।

5. *चांदी का नियम* ''नकारात्मक भलाई'' का नियम है। इस नियम के अनुसार रहने वाले लोग किसी दूसरे की कभी हानि नहीं करते, पर वे किसी दूसरे की भलाई के लिए भी कुछ नहीं करते।

6. *सोने का पानी चढ़ा नियम,* सुनहरी नियम का उलट है: ''दूसरों के साथ वैसा न करो जो तुम नहीं चाहते कि वे तुम्हारे साथ करें।'' इस नियम को मानने के लिए धार्मिक होना आवश्यक नहीं है।

7. *सुनहरी नियम* इन नियमों में सबसे अन्तिम है। गैर मसीही लोगों द्वारा भी इसे नैतिक आदर्श के रूप में माना जाता है। अमेरिका का राष्ट्रपति रहते समय हर्बर्ट हूवर ने कहा था, ''मनुष्य की निर्बलता के कारण, सुनहरी नियम तोड़ा जाता हो सकता है, पर यह महान नियम, जिसका लक्ष्य सामान्य भलाई है, आधुनिक संसार, जिसमें हम रहते हैं, सब शक्तियों में घुसकर बारीकी से उन सब को सुधारता है।''[42] संसार में हर किसी के लिए इस नियम को मनवाना हो सकता है, सम्भव न हो पर, यदि हम केवल उन्हीं से इस नियम को मनवाएं, जो यीशु में विश्वास करने का दावा करते हैं, तो सचमुच में कितना बदलाव आ जाए![43]

पसन्द चुनना (7:13-27)

हमें हर रोज़ कोई न कोई पसन्द चुननी पड़ती है। कई बार हम अच्छे और बेहतर के बीच चुनाव करते हैं। कई बार हमें दो बुराइयों में से कम बुराई को चुनना पड़ सकता है। इस वचन पाठ में, पसन्द भलाई और बुराई में से चुनने की है। हमें इन में से चुनना आवश्यक है:

1. सकेत मार्ग पर चलना या चौड़े मार्ग पर (7:13, 14);
2. भलाई के लिए फल लाना या बुराई के लिए (7:15-20);
3. आज्ञा मानने वाले बनना या आज्ञा न मानने वाले (7:21-23);
4. चट्टान पर बनाना या रेत पर (7:24-27)।

सही मार्ग चुनना (7:13, 14)

इन आयतों में यीशु ने दो अलग-अलग मंजिलों में ले जाने वाले जीवन के दो मार्गों में से एक को चुनने की बात समझाने के लिए मार्ग का रूपक इस्तेमाल किया। दोनों में से चलने के

लिए कि इस मार्ग को चुनना है यह पूरी तरह से हम पर छोड़ दिया जाता है। अदन की वाटिका में आदम और हव्वा से आरम्भ करते हुए सृष्टि के आरम्भ से लेकर परमेश्वर ने लोगों को अपनी ही पसन्द चुनने की छूट दी है।

मसीही जीवन को आम तौर पर ''पथ'' के रूप में वर्णित किया जाता है। वास्तव में आरम्भिक कलीसिया को दिए जाने वाले नामों में से एक यह भी है (प्रेरितों 9:2; 24:14)। भजनकार ने ''धर्मी का मार्ग'' और ''दुष्ट का मार्ग'' में पसन्द का वर्णन किया है (भजन संहिता 1:1-6)। मसीही युग के आने की ओर ध्यान दिलाते हुए एक भविष्यवाणी में यशायाह ने कहा,

> और वहां एक सड़क अर्थात् राजमार्ग होगा,
> उसका नाम पवित्र मार्ग होगा;
> कोई अशुद्ध जन उस पर से न चलने पाएगा;
> वह तो उन्हीं के लिये रहेगा और उस मार्ग पर जो चलेंगे
> वह चाहे मूर्ख भी हों तौभी कभी न भटकेंगे (यशायाह 35:8)।

आत्मिक थकान को दूर करने के लिए अपने पाठकों को प्रोत्साहित करने के लिए लिखते हुए इब्रानियों के लेखक ने उन्हें ''ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो। और अपने पांवों के लिए सीधे मार्ग'' बनाने को कहा (इब्रानियों 12:12, 13)।

इस्राएलियों के कनान में प्रवेश करने की तैयारी करते हुए मूसा ने लोगों को एक संदेश देने और उन्हें यह बताने के लिए कि वह उनके साथ प्रतिज्ञा किए हुए देश में नहीं जाएगा, लोगों को इकट्ठे किया (व्यवस्थाविवरण 31:2)। अपने इस अन्तिम सम्बोधन में उसने उन्हें परमेश्वर के प्रति वफ़ादार होने के लिए एक जबर्दस्त विनती की (व्यवस्थाविवरण 30:19)।

अपनी मृत्यु से कुछ पहले, इसी प्रकार से यह कहते हुए इस्राएलियों को यहोशू ने चुनौती दी:

> इसलिये अब यहोवा का भय मानकर उसकी सेवा खराई और सच्चाई से करो; और जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार और मिस्र में करते थे, उन्हें दूर करके यहोवा की सेवा करो। और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा की सेवा नित करूंगा (24:14, 15; NIV)।

जब उत्तरी राज्य पूरी तरह बाल की पूजा में लग गया, तब एलिय्याह को करमेल पहाड़ पर बाल के नबी मिले। उसने इस्राएलियों के धार्मिक समझौतावादी होने का सामना किया और पूछा, ''तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे? यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो'' (1 राजाओं 18:21)।

यिर्मयाह ने यहूदा के लोगों को अपने सामने पसन्द चुनने की बात याद दिलाई कि या तो यरूशलेम में रहो और इसके साथ-साथ नष्ट हो जाओ या फिर इसमें से भाग जाओ, क्योंकि

परमेश्वर का न्याय निकट आ रहा है। उसने लिखा, ''देखो, मैं तुम्हारे साम्हने जीवन का मार्ग और मृत्यु का मार्ग भी बताता हूं'' (यिर्मयाह 21:8)।

आरम्भ से ही परमेश्वर ने यह स्पष्ट कर दिया है कि लोगों के पास वास्तव में केवल दो ही विकल्प हैं। या तो हम परमेश्वर की बात मानना या उसे न मानना चुन सकते हैं। परमेश्वर की ओर जाने के बहुत से मार्ग नहीं हैं, यानी उस तक जाने वाला केवल एक ही मार्ग है (यूहन्ना 14:6)। स्वर्ग में जाने वाली बहुत सी सड़कें नहीं हैं; वहां केवल एक ही सड़क जाती है (7:14)। हमें सच्चे धर्म और झूठे धर्म में से चुनाव करना आवश्यक है (15:9)। पहाड़ी उपदेश परमेश्वर की धार्मिकता जो अनन्त जीवन में ले जाती है और शास्त्रियों और फरिसियों के कपट जो अनन्त नरक में ले जाता है अन्तर करता है (5:20)।

चौड़ा मार्ग और सकेत मार्ग (7:13, 14)

''चौड़ा'' मार्ग सहनशीलता को कहा गया है। बहुत से लोगों का मानना है कि किसी भी कारण के लिए सहनशील होना बुरी बात है। बेशक कई बार असहनशीलता बुरी होती है; पर परमेश्वर की निन्दा की जा रही होती है, जब सच्चाई पर हमला होता है या जब परमेश्वर के वचन की जगह विचार ले लेते हैं, तो असहनशील होना सही होता है। हमें तंग सोच वाले या घृणित व्यक्ति नहीं बनना, बल्कि हमें तो जो कुछ बाइबल सिखाती है उसे मानने के लिए दृढ़ होना और उन गलत विश्वासों को मानने और उन्हें करने से इनकार करना है। यीशु अन्य देवताओं (4:10), विभाजित वफ़ादारियों (12:30) और परमेश्वर के अन्य मार्ग बताने वालों (यूहन्ना 10:1-10; 14:6) के प्रति असहनशील था।

परमेश्वर का मार्ग सकेत है, क्योंकि यह सच्चाई और पवित्रता का मार्ग है। मसीही लोगों को आम तौर पर ''तंग सोच वाले'' कहा जाता है, जैसे ''उदारचित्त'' होने की बात कहना सबको पसन्दीदा लगता है। इस वचन में यीशु ने बिल्कुल इसके विपरीत बात की। उसने कहा कि ''उदारचित्त'' होना अच्छी बात है क्योंकि इससे सच्चाई खोजने और समझने में हमारी सहायता होती है। इसके विपरीत, उदारचित्त होने का अर्थ किसी भी विपरीत विचार, नैतिकता या अलग जीवनशैली को मान लेना है। इसी कारण यीशु ने हमें इस चौड़े मार्ग पर चलने से बचने की चेतावनी दी।

यीशु ने कहा, ''इसलिए मैं ने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे''; ''और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा'' (यूहन्ना 8:24, 32)। उसने यह भी कहा, ''हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा'' (15:13)। पौलुस ने तीमुथियुस से आग्रह किया ''कितनों को आज्ञा दें कि और प्रकार की शिक्षा न दें'' (1 तीमुथियुस 1:3) और ''इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो तू अपने और अपने सुननेवालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा'' (1 तीमुथियुस 4:16)। अनन्त जीवन की ओर ले जाने वाला मार्ग बहुत ही तंग और यह मार्ग बहुत कम लोगों को मिलता है।

“हे प्रभु, हे प्रभु” (7:21-23)

न्याय के दिन कुछ लोगों को यह पता चलने पर कि वे पिता की इच्छा पर नहीं चल रहे थे, कितना दुख होगा! क्या किसी को यह पता चल सकता है कि वह वफ़ादार मसीही जीवन जी रहा है या नहीं? पौलुस ने लिखा, “अपने आपको परखो कि विश्वास में हो या नहीं। अपने आपको जांचों। क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते कि यीशु मसीह है? नहीं तो तुम जांच में निकम्मे निकले हो” (2 कुरिन्थियों 13:5)। पतरस ने यह स्पष्ट कर दिया कि हमारा “बुलाया जाना” अपने जीवनों में मसीही अनुग्रह को मिलाने से ही “पक्का” हो सकता है (2 पतरस 1:5–11)।

टिप्पणियां

[1]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रेटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 76. [2]मिशनाह *सोटह* 1.7; देखें टालुमड *शब्बथ* 127बी। [3]*जौंडरवन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 50 में माइकल जे. विलकिन्स, “मैथ्यू।” [4]टालमुड *रोश हा–शनाह* 16बी। [5]डेविड हिल, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी। ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 146; देखें *लैवटिकुस रब्बाह* 29.3. [6]क्रेग एस. कीनर, *ए कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1999), 241. [7]देखें टालमुड *अरेखिन* 16बी; *बाबा बथरा* 15बी। [8]टालमुड *बाबा मेज़िया* 59बी। [9]1 मक्काबियों 1:16, 41, 42, 47; 2 मक्काबियों 6:18–7:42. [10]टालमुड में, महत्वपूर्ण भाषण को “मोतियों” से भी संकेत दिया जाता है। (*क़िद्दुशिन* 39बी।)

[11]“खटखटाना” का अलंकारिक इस्तेमाल टालमुड में “प्रार्थना” के लिए भी किया है जिसमें कहा गया है कि मोर्दके ने “अनुग्रह के फाटक खटखटाए गए थे और वे उसके लिए खोले गए थे” (*मेगिलाह* 12बी)। [12]आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 144; रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 66. [13]*द एंकर बाइबल डिक्शनरी,* संपा. डेविड नोयल फ्रीडमैन (न्यू यार्क: डबलडे, 1992), 6:1147 में एडविन फर्मेज, “जुओलिजी।” [14]हिल, 149. [15]कन्फ्युशियस अनालेक्ट्स 15.23. [16]आसोक्रेटस *निकोक्लेस* (*द सिपरियंस*) 61. [17]डायोजीन्स लेयरटिसुय *लाइव्स ऑफ़ एमीनेंट फिलास्फर्स* 5.21. [18]टालमुड *शब्बथ* 31ए. [19]टोबीत 4:15 (NRSV)। [20]प्रवक्ता ग्रंथ 31:15 (NRSV)।

[21]लैटर ऑफ़ अरिसटियुस 207. [22]लूका 6:31 में यीशु द्वारा दिया सुनहरी नियम किसी के अपने शत्रुओं से प्रेम करने के संदर्भ में मिलता है न कि उनके साथ इसके विपरीत करने के सम्बन्ध में (देखें लूका 6:27–36)। [23]माउंस 66. [24]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 1, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 113. [25]टालमुड *शब्बथ* 31ए। [26]फ्रांस, 146. [27]रॉबर्ट एच. गुंड्री, *मैथ्यू: ए कमैंट्री ऑन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 127. [28]फ्रांस, 146. [29]रब्बियों के साहित्य में, दो मार्ग अवश्य बताए जाते थे। यह स्वर्गलोक या गेहन्ना कहीं भी जे जाते हैं। (टालमुड *बेराकोथ* 28बी।) [30]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1-13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 178.

[31]देखें जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 20.5.1, 2; वार्स 2.13.5. [32]देखें *डिडेक* 11–13; 16.3; इग्नेशियुस फिलाडेल्फिया 2.1, 2. [33]हिल, 151. [34]अच्छे फल हवालों के लिए, देखें यूहन्ना 15:8; गलातियों 5:22–24; इफिसियों 5:9–12; कुलुस्सियों 1:10; याकूब 3:17, 18. [35]“उस दिन” के हवालों के लिए, देखें मत्ती 24:36; लूका 10:12; 17:31; 21:34; 2 थिस्सलुनीकियों 1:10; 2 तीमुथियुस 1:12, 18; 4:8. [36]न्याय के दिन के विवरणों के लिए, देखें मत्ती 24:36–51; 25:31–46; प्रेरितों 17:30, 31; 2 कुरिन्थियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 20:11–15. [37]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अक्कॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 182, एन. 87. [38]माउंस, 70. [39]विलकिन्स, 53–54; देखें गोर्डन फ्रैंज, “द पैरेबल ऑफ़

द टू बिल्डर्स," *ऑर्कियालॉजी इन द बिब्लिकल वर्ल्ड* 3 (जून 1995): 6–11. [40]ए. टी. रॉबर्टसन, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टैस्टामैंट,* अंक 1, द *गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,–दि गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मार्क* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1930), 63.

[41]माउंस, 64. [42]हर्वर्ट हूवर, अड्रेस टू वर्ल्ड'स कॉन्फ्रेंस ऑफ़ द यंग मैन'स क्रिश्चियन एसोसिएशन (YMCA), क्लीवलैंड, ओहायो, 8 अगस्त 1931.[43]इस सारे उदाहरण के लिए मूल लेखक का पता नहीं है।